भारत के 16 महाजनपदों का ऐतिहासिक एवं सामाजार्थिक विश्लेषण

[1]अरविन्द राव, सहायक आचार्य इतिहास विभाग, आर. एन. टी. पी. जी. कॉलेज, कपासन
[2]डॉ. ओ.पी. सुखवाल सह आचार्य अर्थशास्त्र विभाग, आर. एन. टी. पी. जी. कॉलेज, कपासन

सारांश 16 महाजनपद लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व में उत्तर–भारतीय मैदानों एवं उत्तरी दक्कन में विकसित प्रमुख राज्य थे। इन महाजनपदों ने संगठित प्रशासन, किलेबंद राजधानियाँ एवं कृषि–आधारित स्थायी सेनाएँ विकसित कीं। इस युग में व्यापार, शहरीकरण और लौह–युगीन प्रौद्योगिकी की प्रगति ने क्षेत्र का रूपांतरण किया और नए धार्मिक–सांस्कृतिक प्रवाहों को जन्म दिया। इस प्रकार, 16 महाजनपदों ने शक्तिशाली साम्राज्यों की नींव रखी, अन्ततः मौर्यों के शासनकाल में मगध का प्रभुत्व बढ़ा।

प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय इतिहास में 16 महाजनपदों का अध्ययन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ये छठी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास विकसित हुए शक्तिशाली राज्य थे, जो मुख्यतः भारत–गंगा मैदानों एवं उत्तरी दक्कन में विस्तृत थे। इनमें राजतंत्र और गणतंत्र दोनों प्रकार की शासन व्यवस्थाएँ सम्मिलित थीं। प्रत्येक महाजनपद ने संगठित प्रशासन, किलेबंद राजधानियाँ और कृषि–आधारित अर्थव्यवस्था के माध्यम से अपने क्षेत्रीय सामर्थ्य को सुनिश्चित किया। इन महाजनपदों के प्रमाण महाकाव्यों जैसे महाभारत, रामायण के साथ–साथ बौद्ध व जैन धर्मग्रन्थों (जैसे अंगुत्तर निकाय, महावस्तु, भगवती सूत्र) एवं पुरातात्विक साक्ष्यों के माध्यम से मिलते हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में पूर्ववर्ती जनपदों का एकीकरण कर 16 महाजनपद शक्तिशाली राज्यों के रूप में उभरे। इस संक्रमण में वैदिक पशुपालन से कृषि–प्रधान अर्थव्यवस्था की ओर बदलाव, लोहे के औजारों का प्रयोग और जनसँख्या वृद्धि सम्मिलित थे, जिनसे व्यापक कृषि अधिशेष उत्पन्न हुआ। इस अधिशेष ने स्थायी शहरी केंद्रों के विकास को प्रेरित किया। पुराने जनजातीय राजव्यवस्थाओं से हटकर नए क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ। कुछ जनपदों ने पड़ोसी जनों को अपने अधिकारक्षेत्र में सम्मिलित करके प्रभाव का विस्तार किया और महाजनपदों में परिवर्तित हुए। इस काल की विशेषता यह थी कि राजगुरु एवं मंत्रिपरिषद के माध्यम से केंद्रीकृत शासन स्थापित हुआ, जिसने कराधान, रक्षा और न्याय के विभिन्न पक्षों का प्रबंधन किया।छठी शताब्दी ईसा पूर्व के प्राचीन भारतीय राज्यों, 16 महाजनपदों का अन्वेषण करें, जिनमें उनकी राजधानियाँ, सामाजिक संरचनाएँ, अर्थव्यवस्था, धर्म और भारत की राजनीतिक, सांस्कृतिक और स्थापत्य विरासत को आकार देने में उनका महत्व शामिल है।छठी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास 16 महाजनपद शक्तिशाली राज्य बनकर उभरे, जो उत्तर वैदिक काल के छोटे जनपदों से विकसित हुए थे। भारत–गंगा के मैदानों और उत्तरी दक्कन क्षेत्र में फैले इन राज्यों में मगध, कोशल, कुरु और पांचाल जैसे प्रमुख राज्य शामिल थे। प्रत्येक महाजनपद ने किलेबंद राजधानियाँ, संगठित प्रशासनिक व्यवस्थाएँ और समृद्ध कृषि द्वारा समर्थित स्थायी सेनाएँ विकसित कीं।इस काल में व्यापार, शहरीकरण और लौह प्रौद्योगिकी में हुई प्रगति ने इस क्षेत्र को रूपांतरित कर दिया। इसके अतिरिक्त, नए धार्मिक और दार्शनिक विचार पनपने लगे, जिससे सांस्कृतिक परिवर्तन में योगदान मिला। महाजनपदों ने शक्तिशाली साम्राज्यों की नींव रखी, और अंततः मौर्यों के शासनकाल में मगध का प्रभुत्व बढ़ा।

महाजनपद शब्द का अर्थ"महानराज्य" या "महानसाम्राज्य"है, जो एकीकृत जनपदों को संदर्भित करता है जिन्होंने अपनी प्रशासनिक प्रणालियों, किलेबंद राजधानियों और सैन्य संरचनाओं का विकास किया था। महाजनपद आधुनिक अफगानिस्तान से बिहार तक और हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों से लेकर दक्षिण में गोदावरी नदी तक फैले हुए थे। ये भारत में बौद्ध धर्म के उदय के समकालीन थे। इन महाजनपदों में राजतंत्र और गणतंत्र दोनों ही प्रकार की राज्य व्यवस्था व्याप्त थी।

सूचना का स्रोत

16 महाजनपद महाभारत और रामायण जैसे संस्कृत महाकाव्यों के साथ–साथ लगभग 700 ईसा पूर्व के पुराणिक साहित्य के लिए ऐतिहासिक संदर्भ प्रदान करते हैं।बौद्ध अंगुत्तरा निकाय सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक स्थितियों की जानकारी प्रदान करता है।

अन्य स्रोत

बौद्ध धर्म के महावस्तु और जैन धर्म के भगवती सूत्र में महाजनपदों का संक्षिप्त उल्लेख है, जिनमें वंगा और मलया शामिल हैं , लेकिन विस्तृत जानकारी नहीं दी गई है। पुरातात्विक साक्ष्य भी इस युग के पुनर्निर्माण में पाठ्य संदर्भों का पूरक हैं।

महाजनपद	राजधानियों	आधुनिक स्थान	इस क्षेत्र में बहने वाली नदियाँ
अंग	चंपा	मुंगेर और भागलपुर (बिहार)	चंदन (चंपा)
मगध	राजगृह / पाटलिपुत्र	नालंदा, गया, पटना (बिहार)	गंगा, पुत्र
कसी	कसी	वाराणसी (उत्तर प्रदेश)	गंगा
वत्सा	कौशांबी	प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)	गंगा, यमुना

कोशल	श्रावस्ती	अवध (उत्तर प्रदेश)	सरयु (घाघरा)
सौरसेना	मथुरा	मथुरा (उत्तर प्रदेश)	यमुना
पांचाल	अहिच्छत्र	बरेली, बदायूँ (उत्तर प्रदेश)	गंगा, यमुना
कुरु	इंद्रप्रस्थ	मेरठ (उत्तर प्रदेश)	यमुना, गंगा
मत्स्य	विराटनगर	जयपुर (राजस्थान)	चंबल
चेदी	सोतिवती	बुन्देलखण्ड (मध्य प्रदेश/यूपी)	केन, यमुना
अवंती	उज्जैन/महिष्मती	मालवा (मध्य प्रदेश)	शिप्रा, नर्मदा
गांधार	तक्षशिला	पाकिस्तान/अफगानिस्तान	सिंधु, काबुल
कंबोज	राजपुरा	काबुल घाटी (अफगानिस्तान/कश्मीर)	विपास (ब्यास)' या सिंधु की सहायक नदियाँ
अश्मक	पैठन	गोदावरी बेसिन (महाराष्ट्र)	गोदावरी
वज्जि	वैशाली	वैशाली (बिहार)	गंडक
मल्ल	कुशीनारा	कुशीनगर (उत्तर प्रदेश)	राप्ती, गंडक

16 महाजनपदों का उद्भव

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में पूर्ववर्ती जनपदों के एकीकरण से 16 महाजनपद शक्तिशाली राज्यों के रूप में उभरे । इस परिवर्तन के दौरान राजनीतिक, सैन्य और प्रशासनिक संरचनाओं का विकास हुआ, जिन्होंने प्राचीन भारत के परिदृश्य को आकार दिया।

वैदिक पशुपालन से संक्रमणः– वैदिक पशुपालन से जनपदों में संक्रमण ने कृषि संबंधी प्रगति और शहरी केंद्रों के उदय से प्रेरित होकर, जनजातीय राजव्यवस्थाओं से अधिक स्थिर, क्षेत्रीय–आधारित राज्यों में एक महत्वपूर्ण बदलाव को चिह्नित किया।

जनजातियों का बसावः– पूर्व की ओर पलायन करने वाली जनाओं या जनजातियों ने विभिन्न क्षेत्रों में बसना शुरू कर दिया। इससे व्यक्तिगत जनजातियों या कुलों (जना) पर आधारित निष्ठा से हटकर क्षेत्रों (जनपद) पर केंद्रित निष्ठा की ओर बदलाव आया।

नए कृषि उपकरणः– उन्नत लोहे के औजारों और कृषि पद्धतियों ने उत्पादकता में वृद्धि की, जिससे तात्कालिक उपभोग आवश्यकताओं से अधिक कृषि अधिशेष उत्पन्न हुआ। इस अधिशेष ने आर्थिक विकास और स्थायी समुदायों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मिट्टी की बस्तियों से शहरीकरण की ओर बदलावः– कृषि उत्पादकता में वृद्धि के साथ, कुछ बस्तियाँ आकार और जटिलता में बढ़ने लगीं, जिससे साधारण मिट्टी की बस्तियों से अधिक संरचित शहरी केंद्रों में परिवर्तन हुआ, जिसे द्वितीय शहरीकरण कहा जाता है। इन शहरी केंद्रों में अक्सर रक्षा के लिए किलेबंदी शामिल होती थी।

राजा सर्वोच्च शासक थाः– वह कृषि अधिशेष पर कर लगाता था और उसे पुनर्वितरित करता था तथा बल और दबाव के द्वारा पदानुक्रमित समाज में कानून और व्यवस्था बनाए रखता था।

जनपदों से महाजनपदों में परिवर्तनः– "जनपद" शब्द का शाब्दिक अर्थ है "वह स्थान जहाँ जनजाति अपना पैर रखती है।" जनपद अक्सर संसाधनों, क्षेत्र और राजनीतिक वर्चस्व को लेकर आपस में संघर्ष करते थे।कुछ जनपदों ने विभिन्न जनों को अपने अधिकार क्षेत्र में शामिल करके अपने क्षेत्र का विस्तार करने में सफलता प्राप्त की। प्रभाव और नियंत्रण का विस्तार करने वाले ये जनपद महाजनपदों में विकसित हुए।

महाजनपदो में मगध की भूमिकाः– महाजनपद उन क्षेत्रीय राज्यों के विकास का प्रतिनिधित्व करते थे जो लोगों (जन) पर शासन करते थे और बड़े भौगोलिक क्षेत्रों को नियंत्रित करते थे।शासन के केंद्र में राजा ही बना रहा, जिसे एक केंद्रीकृत प्रशासन का समर्थन प्राप्त था जो कराधान, रक्षा और न्याय सहित राज्य के विभिन्न पहलुओं का प्रबंधन करता था।

इस काल में मगध सबसे प्रमुख महाजनपदों में से एक था। रणनीतिक स्थिति और सैन्य शक्ति तथा राजनीतिक गठबंधनों के माध्यम से सत्ता को मजबूत करने की क्षमता के कारण इसने महत्व प्राप्त किया।मगध के सत्ता में आने से भारतीय इतिहास में भविष्य के घटनाक्रमों की नींव पड़ी, जिसमें बड़े साम्राज्यों का उदय भी शामिल है।

16 महाजनपदों की विशेषताएं

सोलह महाजनपद प्राचीन भारतीय राज्य थे जिनमें विविध प्रशासनिक संरचनाएं, समाज, अर्थव्यवस्थाएं और सैन्य प्रणालियां थीं। उनकी अनूठी विशेषताओं में सुव्यवस्थित शासन व्यवस्था, समृद्ध व्यापार और धार्मिक विविधता शामिल थी, जिसने प्राचीन भारत में सांस्कृतिक और राजनीतिक विकास की नींव रखी।

प्रशासनः– 16 महाजनपदों का प्रशासन राजतंत्र या कुलीनतंत्र के प्रकार के आधार पर विभिन्न प्रणालियों द्वारा संरचित था। इन राज्यों में सुस्पष्ट शासन व्यवस्था थी, जिसमें ग्राम परिषदें, कराधान प्रणाली और वित्त, रक्षा और न्याय जैसे विभागों में जिम्मेदारियों का विभाजन शामिल था।

बुनियादी इकाईः– बस्ती की बुनियादी इकाई गाँव (ग्राम) थी और जब दो गाँव आपस में मिल जाते थे, तो उससे संग्राम बनता था।

गामिनीः– गांवों के नेताओं को गामिनी कहा जाता था, हालांकि, उन्हें कभी–कभी हाथी और घोड़े के प्रशिक्षक, सैनिक और मंच प्रबंधक के रूप में भी जाना जाता था।

कराधानः– महाजनपदों के प्रशासन के वित्तपोषण के लिए एक सुव्यवस्थित कराधान प्रणाली थी।

रियासतों में प्रशासनः– इन पर एक राजा का शासन होता था, जिसे मंत्रिपरिषद का समर्थन प्राप्त था। प्रशासन को वित्त, रक्षा और न्याय जैसे विभिन्न विभागों में विभाजित किया गया था।

गण–संघों में प्रशासनः– उनकी शासन प्रणाली कुलीनतंत्र पर आधारित थी। राजा का चुनाव बड़ी परिषदों या सभाओं की मदद से होता था, जिनमें सभी महत्वपूर्ण कुलों और परिवारों के मुखिया शामिल होते थे।

समाज

महाजनपद काल में समाज विभिन्न वर्गों में विभाजित था, जिनमें कुलीन वर्ग, व्यापारी, किसान और मजदूर शामिल थे। जाति व्यवस्था अपने प्रारंभिक चरण में थी और पूरी तरह से स्थापित नहीं हुई थी, जिसमें क्षत्रिक और कस्सक जैसे सामान्य किसान शूद्र जाति से संबंधित थे।उस समय दास प्रथा व्यापक रूप से प्रचलित थी, और दासों को विभिन्न प्रकार के शारीरिक श्रम में लगाया जाता था।हालांकि वैवाहिक गठबंधनों का आमतौर पर उपयोग किया जाता था, लेकिन राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं को प्राथमिकता मिलने पर वे अक्सर गौण हो जाते थे।

अर्थव्यवस्था

मुख्य व्यवसाय कृषि था और राज्य मुख्य रूप से कृषि प्रधान थे। सुस्थापित व्यापार मार्गों के कारण व्यापार और वाणिज्य भी फलता–फूलता था।

मुद्रा प्रणालीः सिक्कों का उपयोग व्यापार और वाणिज्य के लिए किया जाता था। ये चांदी या तांबे के बने होते थे और अक्सर इन पर राज्य की राजनीतिक और सांस्कृतिक पहचान को दर्शाने वाले चिह्न और शिलालेख अंकित होते थे, जिन्हें पंच–चिह्नित सिक्के कहा जाता था ।

नाम : कहपना, निक्खा, काकनिका, कंस, पद, मसाका।

धर्मः– महाजनपदों में धार्मिक विविधता थी और लोग हिंदू धर्म तथा बौद्ध धर्म और जैन धर्म जैसे विभिन्न धर्मों का पालन करते थे । इस काल के अन्य विधर्मी संप्रदाय आजीविका, अजना और चार्वाक थे। इसके अलावा, राजा अक्सर विभिन्न धर्मों को संरक्षण देते थे और धार्मिक नेताओं का जनता पर काफी प्रभाव था।

सैन्यः– इन राज्यों के पास पैदल सेना, घुड़सवार सेना, युद्ध रथ और हाथियों से युक्त सुव्यवस्थित सैन्य बल थे। महान महाकाव्य महाभारत में कुरुक्षेत्र युद्ध के दौरान प्रयुक्त चक्रव्यूह सहित विभिन्न सैन्य तकनीकों का वर्णन है। राजाओं के पास वफादार सेनाएँ थीं, और लगातार युद्धों के कारण राज्यों के बीच निरंतर संघर्ष होते रहते थे।

कला और वास्तुकलाः– महाजनपद काल में कला और वास्तुकला की एक अनूठी शैली देखने को मिली। उन्होंने मंदिर , स्तूप और महल जैसी प्रभावशाली संरचनाओं का निर्माण किया । कला की विशेषता जटिल नक्काशी और मूर्तियां थीं जो लोगों की धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताओं को दर्शाती थीं।

व्यापारः– दो प्रमुख व्यापार मार्ग, उत्तरापथ और दक्षिणापथ , उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों को आपस में जोड़ते थे। इन मार्गों ने क्षेत्रों के बीच वस्तुओं, विचारों और संस्कृतियों के आदान–प्रदान को सुगम बनाया।

बंदरगाह : ताम्रलिप्ता (तामलुक), भरूच और सोपारा जैसे बंदरगाह इस युग में व्यापार के महत्वपूर्ण केंद्र थे। ये समुद्री व्यापार गतिविधियों के लिए प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करते थे, जिससे विभिन्न राज्यों और यहां तक कि दूर–दराज के देशों के बीच वस्तुओं और सामानों का आदान–प्रदान संभव हो पाता था।

मगध की भूमिका

विभिन्न कारकों के संगम के कारण मगध ने सबसे प्रभावशाली महाजनपद के रूप में अपनी विशिष्टता अर्जित की, जिन्होंने सामूहिक रूप से इसकी शक्ति और समृद्धि में योगदान दिया। इन कारकों में भौगोलिक और राजनीतिक दोनों आयाम शामिल थे।

प्राकृतिक सीमाएँः– मगध उत्तर, पश्चिम और पूर्व में क्रमशः गंगा, सोन और चंपा नदियों से प्राकृतिक रूप से घिरा हुआ था। इस भौगोलिक संरचना ने प्राकृतिक अवरोध प्रदान किए जिससे रक्षा क्षमता बढ़ी, परिवहन सुगम हुआ, जल आपूर्ति सुनिश्चित हुई और कृषि की उर्वरता में वृद्धि हुई।इसकी पूर्व राजधानी पांच पहाड़ियों के बीच स्थित थी, जो अंतर्निहित प्राकृतिक किलेबंदी प्रस्तुत करती थी।

रणनीतिक राजधानियाँः– राजगृह या गिरिव्रज, इसकी पहली राजधानी, पाँच पहाड़ियों से घिरी हुई थी, जिससे यह शहर अभेद्य बन गया था। राजगृह प्राचीन भारत में किलेबंद राजधानी शहर का सबसे प्रारंभिक उदाहरण भी है।पाटलिपुत्र , जो बाद में मगध की राजधानी बना, गंगा, सोन और गंडक नदियों के संगम पर स्थित था, जो एक "जलदुर्ग" या जल किला बनाता था। इस रणनीतिक स्थान ने राजधानी को सुरक्षा और नदी व्यापार पर एकाधिकार प्रदान किया।

प्रचुर प्राकृतिक संसाधनः– इस क्षेत्र में नदियों की प्रचुरता जल आपूर्ति, परिवहन और कृषि भूमि की उर्वरता बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण थी। मगध के कुछ क्षेत्र जंगलों से आच्छादित थे, जिनसे घर, गाड़ियाँ और रथ बनाने के लिए लकड़ी मिलती थी, साथ ही सेना के लिए हाथियों को प्रशिक्षित करने के संसाधन भी उपलब्ध होते थे।इस क्षेत्र में लौह अयस्क की खानों की मौजूदगी ने मजबूत औजारों और हथियारों के उत्पादन को संभव बनाया।इसके अतिरिक्त, पर्याप्त वर्षा और नदी के पानी की बारहमासी आपूर्ति ने भूमि की उर्वरता सुनिश्चित की, जिससे कृषि उत्पादन में अधिशेष प्राप्त हुआ।

आर्थिक कारकः– मगध का गंगा घाटी के व्यापार मार्गों और बंगाल की खाड़ी के समुद्री मार्गों पर नियंत्रण था। समृद्धि और जनसंख्या में वृद्धि के कारण कृषि, खनन, नगर निर्माण और सेना के विस्तार जैसी गतिविधियों में वृद्धि हुई।यह लगभग वत्सा और अंगा नदियों के बीच स्थित था, जिससे दोनों महाजनपदों के साथ व्यापार और वाणिज्य में सुविधा होती थी।

महत्वाकांक्षी शासकः– बिम्बिसार ने अन्य जनपदों को जीतने के लिए हर संभव साधन का प्रयोग किया। उन्होंने वैवाहिक गठबंधन और प्रत्यक्ष विजय दोनों का सहारा लिया। बिम्बिसार के पुत्र अजातशत्रु तो और भी अधिक महत्वाकांक्षी थे। उन्होंने प्रत्यक्ष तरीकों के साथ–साथ छल और कपट का भी प्रयोग करके अन्य राज्यों को जीता।महापद्म नंदा मगध के क्षेत्र का विस्तार करने के लिए भी बहुत महत्वाकांक्षी थे।इसके अतिरिक्त, मगध के इन शासकों ने मजबूत स्थायी सेनाएँ बनाए रखीं।

निष्कर्ष

16 महाजनपदों ने प्राचीन भारत में क्षेत्रीय राज्यों के युग की नींव रखी। इस काल में संगठित राजतांत्रिक संरचनाएँ और द्वितीय शहरीकरण के कारण बड़े क्षेत्रों में स्थायी नगरीय केंद्रो का विकास हुआ। इसके फलस्वरूप व्यापार और राजनीतिक गठबंधनों के नए मार्ग खुले, तथा प्रशासनिक नवाचारों ने राज्य निर्माण प्रक्रिया को गुणात्मक बनाया। महाजनपदों ने कलात्मक समृद्धि और साहित्यिक उन्नति की बुनियाद भी रखी। अन्ततः मगध की प्रभुत्वशाली स्थिति ने मौर्य साम्राज्य के उदय के लिए आधार तैयार किया। इन महाजनपदों द्वारा स्थापत्य, साहित्य और धार्मिक दृष्टि से स्थापित परंपराएँ भारतीय इतिहास के उत्तरकालीन विकास पर स्थायी प्रभाव छोड़ने में सफल रहीं।

सन्दर्भ

1. झा.डी.एन. (2009) प्राचीन भारत का इतिहास, नई दिल्लीः पुस्तक महल।

2. शर्मा, आर.एस. (2012) भारतीय प्राचीन इतिहास दिल्लीः ओरिएंट ब्लैकस्वान।

3. त्रिपाठी, रामशरण, (2010) प्राचीन भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, वाराणसीः विश्वविद्यालय प्रकाशन

4. ठाकुर विजय कुमार (2004) भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास पटनाः किताब महल।

5. सिंह, उपेन्द्रनाथ , (2011) मोर्य साम्राज्य और भारतीय इतिहास, दिल्ली राजकमल प्रकाशन।

6. चौबे, प्रमोद कुमार (2008) भारत में साम्राज्य निर्माण की प्रक्रिया लखनऊ साहित्य भवन।

7. गुप्ता एस.पी. (2007) भारतीय सभ्यता का इतिहास दिल्ली आशा प्रकाशन।

8. मिश्रा जगदीश, (2013) प्राचीन भारतः राजनीति और संस्कृति वाराणसीः भारतीय प्रकाशन।

9. राय, अजय कुमार (2014) , भारत का सांस्कृतिक विकास, पटनाः विद्यार्थी प्रकाशन।

10. वर्मा एस.के. (2015) गुप्त काल और भारतीय संस्कृति का स्वर्ण युग दिल्लीः निलम प्रकाशन।

11. पाण्डे गोविन्द चन्द्र (2006) बौद्ध धर्म और उसका प्रभाव, वाराणसी चौखम्भा संस्कृत सीरीज।

12. सिंह के. (2009) प्राचीन भारत नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस।

13. पाण्डे विमल चन्द्र (1992) प्राचीन भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, सैन्ट्रल पब्लिसिंग हाऊस, इलाहबाद।

14. गुप्ता सुमन (2000) प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास स्वामी प्रकाशन जयपुर।

15. खन्ना कैलाश (2010) प्राचीन भारत का इतिहास अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली।

16. चक्रवर्ती रणबीर (2012) भारतीय इतिहास का आदि काल– प्राचीनतम पर्व से 600 ईस्वी तक ओरिएंट ब्लैकस्वान नई दिल्ली।